Essential English Texts for Teaching at Gyudmed Tantric Monastery with

His Holiness the 14th Dalai Lama Tenzin Gyatso 8 – 12 December 2015

Texts by

Je Tsongkhapa Lobzang Dragpa and

The 7th Dalai Lama Kalsang Gyatso

Compiled by Tulku Tenzin Gyurmey

Contents

- 1. In Praise of Dependent Origination

 Translated by Geshe Thupten Jinpa
- 2. Destiny Fulfilled

 Translated by Tenzin Tsepag
- 3. Rain Shower of Feats: A Song of the Four Mindfulnesses Translated by Geshe Dorji Damdul
- 4. The Three Principal Aspects of Path

 Translated by Geshe Thupten Jinpa

हेद प्रज्ञेय नर्से द मान विवास स्ति।

- १ यहिन्दान्ति । क्षात्रेन्दान्द्रस्य स्थान्ति । स्रोत्येन्दान्द्रस्य स्थान्ति । स्रोत्येन्द्रस्य स्थान्ति ।
- द पहेना हेत् सुन् माहे खेत्ना । ने प्ये हाता का सेना खेता । नह बेना का बेन्या सही । हेत्र हेन प्यत्रेल नम् प्यत्र मान्या शुरु शा ।
- ३ ने के कें न्याप्त क्षा । हेन कें नियम्बद्धा नियम केंद्र कें केंद्र के
- दें अळ र ज्युर पा के दिया होता । च के दें दें अप के त्या के यह के त्या के यह के त्या के यह के त्या के यह के त के के त्या के के तिया के यह के तिया के यह के तिया के यह के तिया के यह के तिया के तिय
- ५ न्यान्यानः क्रीक् त्यान्यस्या । ने ने न्यान्य क्षेत्रः विका । न्या सुन्यान्य विकासी स्वार्थित । न्या सुन्यान्य क्षेत्रः स्वार्थित । न्या सुन्या स्वार्थित । । न्या सुन्या सुन्या । । न्या सुन्या सुन्या । ।
- ५ न्यार, प्रकार करें हो । क्षत्र प्रदेश प्रकार प्रकार के स्वार की । क्षत्र प्रकार के स्वार के स्वार के स्वार की । क्षत्र प्रकार के स्वार के स्व

In Praise of Dependent Origination

Je Tsongkhapa

- He who speaks on the basis of seeing,
 This makes him a knower and teacher unexcelled,
 I bow to you, O Conqueror, you who saw
 Dependent origination and taught it.
- Whatever degenerations there are in the world,
 The root of all these is ignorance;
 You taught that it is dependent origination,
 The seeing of which will undo this ignorance.
- 3 So how can an intelligent person
 Not comprehend that this path
 Of dependent origination is
 The essential point of your teaching?
- 4 This being so, who will find, O Savior, A more wonderful way to praise you Than [to praise you] for having taught This origination through dependence?
- 5 "Whatsoever depends on conditions,
 That is devoid of intrinsic existence."
 What excellent instruction can there be
 More amazing than this proclamation?
- By grasping at it the childish
 Strengthen bondage to extreme views;
 For the wise this very fact is the doorway
 To cut free from the net of elaborations.

- सुः श्लेषाशः उदः तः नाउसः द्वेदेः क्षेता । सः श्लेशः तः द्वेरशेटः नो न विदा । सः श्लेशः तः द्वेरशेटः नो न विदा ।
- क्षेत्रस्कृत्यः स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य । क्षेत्रस्वरङ्गा स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य । क्षेत्रस्वरङ्गा स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य । क्षेत्रस्वरङ्गा स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य ।
- देशःसदः क्षेत्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास स्वास्त्रः स्वास्त्त
- १० हेद्र-हेद-प्रश्चेष-त्र-प्रश्चित्र-श्चेष्य| | यर्षेद-त्र-प्रश्चेष-त्र-प्रश्चित्र-श्चे-स्वा | हे-स्वर-पिंद-तु-स्वर-प्रश्चेष-त्र-प्रश्चेष्य| |
- ११ हिंद् वे व्ययः विषाः र्वेदः वः वेदा । हेव व्यक्तः र्देवः तुः अर्वेदः वः वा । स्टः विवासी अः वे र्वेदः वः वा । स्टः विवासी अः वे र्वेदः विवास विदः । ।
- ११ दे समार्थेवास्य सर्वेद्य स्वात्त्र । क्ष्रेंद्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र । कुष्ट स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र । कुष्ठ स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र ।

- Since this teaching is not seen elsewhere,
 You alone are the Teacher;
 Like calling fox a lion, for a Tirthika
 It would be a word of flattery.
- Wondrous teacher! Wondrous refuge!
 Wondrous speaker! Wondrous savior!
 I pay homage to that teacher
 Who taught well dependent origination.
- 9 To help heal sentient beings,
 O Benefactor, you have taught
 The peerless reason to ascertain
 Emptiness, the heart of the teaching.
- This way of dependent origination,
 Those who perceive it
 As contradictory or as unestablished,
 How can they comprehend your system?
- 11 For you, when one sees emptiness
 In terms of the meaning of dependent origination,
 Then being devoid of intrinsic existence and
 Possessing valid functions do not contradict.
- Whereas when one sees the opposite,
 Since there can be no function in emptiness
 Nor emptiness in what has functions,
 One falls into a dreadful abyss, you maintain.

- १३ देश्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः स्वात्रः स्वर्धेन्यः स्वर्येन्यः स्वर्धेन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन्यः स्वर्येन
- १०० क्ष्रिंगः सेन्द्रसः समितेः से क्ष्यामिते ।

 देशः द्वासः नहेतः व्यन्ति ।

 देशः देशः समितेः से क्ष्यः समितेः से क्ष्यः ।

 कुः नुदः क्रिकः समितेः से क्ष्यः समितेः से क्षियः ।
- १५ दे: ब्रेन्स्नहेब व्याय ब्रुट्स व्याय श्री । अप्ताहिताय कें या प्रताय प्रायम । स्टाय ब्रेन्स्य व्याय स्थाय । अप्ताहिताय कें या प्रताय स्थाय ।
- १६ स्ट.चलेब्रःक्वॅगःयःश्चेन्यःयःश्चेरः।। श्च.टब्रःब्र्यःयःसःशःस्ट.चलेब्रःवणवःलॅन्ड्।। श्च.टब्रःब्र्यःयःश्चेन्यःव्लेटः।।
- वद्गेत्यःशुः धेशः दर्जेदः त्रस्य विश्वा
- १६ स्ट.चिब्रेन्द्रचादः स्ट.चेन्द्राः न्द्राः। द्रिः त्यः चहेत्रः त्रस्यः द्रिः त्यद्राः चित्रः चित्रः।। इसः चावायः दर्ः चर्त्रः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः ।। स्वरः चावायः दर्ः चर्त्रः स्वरः स्वरः स्वरः ।।

- Therefore in your teaching
 Seeing dependent origination is hailed;
 That too not as an utter non-existence
 Nor as an intrinsic existence.
- The non-contingent is like a sky flower,
 Hence there is nothing that is not dependent.
 If things exist through their essence, their dependence on
 Causes and conditions for their existence is a contradiction.
- 15 "Therefore since no phenomena exist
 Other than origination through dependence,
 No phenomena exist other than
 Being devoid of intrinsic existence," you taught.
- 16 "Because intrinsic nature cannot be negated,
 If phenomena possess some intrinsic nature,
 Nirvana would become impossible
 And elaborations could not be ceased," you taught.
- 17 Therefore who could challenge you?
 You who proclaim with lion's roar
 In the assembly of learned ones repeatedly
 That everything is utterly free of intrinsic nature?
- That there is no intrinsic existence at all
 And that all functions as "this arising
 In dependence on that," what need is there to say
 That these two converge without conflict?

- १६ नहेद द्याप स्ट्वीट निर्मेश क्षेत्र स्ट्वी । स्थम स्थान स्यान स्थान स
- दे प्राविद्ध्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यः विद्यात्र्यात्र्यः विद्यात्रः विद्यात्र विद्यात्रः विद्यात्रः
- ४१ वहें त्यसम्हें सक्तर क्युर न दहा । वहें त्यस सह हैं जुह र न न हों । कुं वा वहें से क्युर क्युर न हों । न सूर्व र न र त्युर क्युर न हों ।
- २२ र्झेन्यास्यास्य प्राप्त । विद्यास्य स्था ।
- १३ हिंद् श्री नाशुर नी नाहेश सदे सहेंद्र । । नहेद देश प्राप्त हुर न निश्च हुर स्वा । वेद स्वा किं केंद्र स्वा न केंद्र स्वा । वेद स्वा किं केंद्र स्व केंद्र सहस्य ।

- "It is through the reason of dependent origination
 That one does not lean towards an extreme;"
 That you've declared this excellently is the reason,
 O Savior, of your being an unexcelled speaker.
- 20 "All of this is devoid of essence,"
 And "From this arises that effect" –
 These two certainties complement
 Each other with no contradiction at all.
- What is more amazing than this?
 What is more marvellous than this?
 If one praises you in this manner,
 This is real praise, otherwise not.
- 22 Being enslaved by ignorance
 Those who fiercely oppose you,
 What is so astonishing about their being
 Unable to bear the sound of no intrinsic existence?
- 23 But having accepted dependent origination, The precious treasure of your speech,
 Then not tolerating the roar of emptiness –
 This I find amazing indeed!
- 24 The door that leads to no intrinsic existence,
 This unexcelled [door of] dependent origination,
 Through its name alone, if one grasps
 At intrinsic existence, now this person

- द्रिः स्टानिह्न निर्मा स्वेतः स्व हेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वाति स्वा । हेः स्वातः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वाति स्वातः स्वेतः स्वाति स्व
- दर्भः महेद्राह्म स्वाद्या । स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्य स्वाद्यात्र स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद स
- दर् हेर् छैश हे दूर तम्ब्रह्म स्वाध्या । स्वाधारी हेर् यस त्वाधारी हिस्स स्वाधारी । स्वाधारी हेर्स स्वाधारी ।
- १८ हे.श्चन्डें,व्यदी,वयन्यया । अर्थेन्द्रवायायान्यः स्ट्रिंग्यं व्या । र्शें वर्द्रवायायान्यः स्ट्रिंग्यं व्या । वर्षे अप्याप्तः स्ट्रिंग्यं व्या ।
- २० हिंन् ग्रे श्वाचा ह्वा सेन्यम् । सर्वेद्र नते हु सळ्द हेद प्रश्चर मे । स्वाप्ति हेन् ग्रे म्स्र म्वाद्य स्वाप्त । । क्रम्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त । ।

- Who lacks the unrivalled entrance,
 Well travelled by the Noble Ones,
 By what means should one guide him
 To the excellent path that pleases you?
- 26 Intrinsic nature, uncreated and non-contingent,
 Dependent origination, contingent and created –
 How can these two converge
 Upon a single basis without contradiction?
- Therefore whatever originates dependently,
 Though primordially free of intrinsic existence,
 Appears as if it does [possess intrinsic existence];
 So you taught all this to be illusion-like.
- Through this very fact I understand well
 The statement that, to what you have taught,
 Those opponents who challenge you
 Cannot find faults that accord with reason.
- Why is this so? Because by declaring these Chances for reification and denigration Towards things seen and unseen Are made most remote.
- Through this very path of dependent origination,
 The rationale for your speech being peerless,
 Convictions arise in me [also]
 That your other words are valid too.

- ३० र्नेव नबेव नबेव विकास क्षार्य म्यान्य न क्षेत्र न्या क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र न्या स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार
- देव चे.ब्रेन्ट्स्ट्स्य-च-बहेब्-ब्रेस्-च्याय-चवेब्रा । चे.ब्रेन्ट्स्स्य-च-बहेब्-ब्रेस्-च्याय-चवेब्रा । चन्त्रान्त्र-च्याय-चहेब्-ब्रेस्-च्याय-चवेब्रा । चन्त्र-च्याय-चहेब्-ब्रेस्-च्याय-चव्याय-च्या
- २२ के.श्रद्धःश्वित्रः चर्त्वाश्वेशः ही । हिन्द्यः मन्द्रः निः हिन्द्यः ही । हिन्द्यः सम्बद्धः सम्बद्धः स्वात्वाः ।
- २ हिंद्-गशुद-र्-अ-डे-बेन्-श्चेंश् । क-पश-दे-धे-देंद-डंश-यवद-। । देव-श्चे-डंश-डंश-यवद-। । देव-श्चे-डंश-डे-व-श्चेन्। देव-श्चे-डंश-डे-व-श्चेन्।
- दर्भ कर अक्षान निक्स क्षेत्र क्षेत्

- You who speak excellently by seeing as it is, For those who train in your footsteps, All degenerations will become remote; For the root of all faults will be undone.
- But those who turn away from your teaching,
 Though they may struggle with hardship for a long time,
 Faults increase ever more as if being called forth;
 For they make firm the view of self.
- 33 Aha! When the wise comprehend
 The differences between these two,
 Why would they not at that point
 Revere you from the depths of their being?
- Let alone your numerous teachings,
 Even in the meaning of a small part,
 Those who find ascertainment in a cursory way,
 This brings supreme bliss to them as well.
- 35 Alas! My mind was defeated by ignorance; Though I've sought refuge for a long time, In such an embodiment of excellence, I possess not a fraction of his qualities.
- Nonetheless, before the stream of this life Flowing towards death has come to cease That I have found slight faith in you Even this I think is fortunate.

- २१ हिंद् ग्रीका है ख्रेद नगाव नक्षवान। हेद विदेश हैद ज्यका नहस्रका द्वा । दे प्यत्र ख्राद्व व्यद्व ख्रीत है।। बे व्यक्त स्थेद सहस्त हिंद व्यक्षेत्र।
- ३,৫ क्रे.सर्ट.हिंद.क्रे.चश्रद.स.दी। नद.ची.इ.सर्ट.ज्य.स्ट.चा। दे.दच.चश्रद.खर.क्ट.खे.दक्कुर.खेरा। हिंद.चश्रद.खंद.चर.श्रु.खे.चुशा।
- खेबाश्वास्त्रस्यात्रस्य स्ट्रीयायसेवा । क्षेत्रात्रस्यायायायत्त्रसङ्केराचीत्रस्य । स्रमार्केवासम्बद्धस्य सङ्ग्रस्य स्टरा ।
- चर्यासे स्वाप्त स्वाप
- ह्य यहायी थ्रिक् प्रकास स्थाप । द्वित्र स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

- Among teachers, the teacher of dependent origination,
 Amongst wisdoms, the knowledge of dependent origination

 You, who're most excellent like the kings in the worlds,
 Know this perfectly well, not others.
- All that you have taught
 Proceeds by way of dependent origination;
 That too is done for the sake of nirvana;
 You have no deeds that do not bring peace.
- 39 Alas! Your teaching is such,
 In whosoever's ears it falls,
 They all attain peace; so who would not be
 Honoured to uphold your teaching?
- It overcomes all opposing challenges;
 It's free from contradictions between earlier and latter parts;
 It grants fulfilment of beings' two aims –
 For this system my joy increases ever more.
- 41 For its sake you have given away,
 Again and again over countless eons,
 Sometimes your body, at others your life,
 As well as your loving kin and resources of wealth.
- 42 Seeing the qualities of this teaching Pulls [hard] from your heart,
 Just like what a hook does to a fish;
 Sad it is not to have heard it from you.

- ३ ने.ले.ब्रु.च्न.अ्नमः क्रैमः द्वी ।
 ३ न.च.च.च.च.च.च.चे.लेन्। ।
 ३ न.च.चे.लेन्नः क्रेम्न द्वी ।
- द्रीयवर हिंद्ग्याश्वर वश्वर या श्री । स्ट्रिंगी द्रायस स्ट्रिंग्या स्ट्रिंग्य प्रीयास्य हिंद्य । स्ट्रिंगी द्रायस स्ट्रिंग्या स्ट्रिंग्य स्ट्रिंग्य हिंद्य । स्ट्रिंगी स्ट्रिंगी स्ट्रिंगी स्ट्रिंगी स्ट्रिंगी हिंद्य ।
- न्द्रांचे त्रे द्वे त्रे क्ष्या । स्रिन्यः श्वनः प्रते त्वाश्वन स्रुवः हो । स्रुनः यः श्वनः प्रते त्वश्वन स्रुवः हो । स्रुनः यः श्वनः व्यव्यक्षाः स्रुवः हो ।
- क्रे, स्थान, भीष भीष्ट स्थान स्थान । अप्रीय स्थान स्थान स्थान स्थान । अप्रीय स्थान स्थान स्थान स्थान । अप्रीय स्थान स्थ
- र्वेत्यत्दे सर्वेत्त्वयः यन्ता वीयः ती । वर्षेत्यः यन्ते सर्वेतः वयः यन्ता वीयः ती ।

- The intensity of that sorrow
 Does not let go of my mind,
 Just like the mind of a mother
 [Constantly] goes after her dear child.
- 44-45 Here too, as I reflect on your words, I think, "Blazing with the glory of noble marks
 And hallowed in a net of light rays,
 This teacher, in a voice of pristine melody,

Spoke thus in such a way."
The instant such a reflection of the Sage's form Appears in my mind it soothes me,
Just as the moon-rays heal fever's pains.

- This excellent system, most marvellous, Some individuals who are not so learned Have entangled it in utter confusion, Just like the tangled *balbaza* grass.
- 47 Seeing this situation, I strove
 With a multitude of efforts
 To follow after the learned ones
 And sought your intention again and again.
- At such times as I studied the numerous works
 Of both our own [Middle Way] and other schools,
 My mind became tormented ever more
 Constantly by a network of doubts.

- सुं श्रुनःगतुरः खेनायते छुन। हे नते दे त्योगः नरः खुरः नश्रुदः ग। सुं नते दे त्योगः नरः खुरः नश्रुदः ग। सुं ने सुं ने स्वाप्तान्ति स्वाप्ताः सुन् ।

- ५२ अह्र-सःगुद्यास्यःमश्चरःनेहि। । सह्र-स्यक्ष्याःधेदःनेष्यःहि। । नेहिराधेदःद्वेरःस्यम्यःसःधेया । स्रोधिकःस्यान्ध्यःस्य
- ५० क्र्रेंब्र-मः ञ्चान्द्राच्ये प्रदेश्वर स्वरं क्र्रान्यः स्वरं । स्वान्य प्रदेश स्वरं ज्ञान्य स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं । स्वीन्य प्रदेश स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं । स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं । स्वरं ।

- The night-lily grove of Nagarjuna's treatises –
 Nagarjuna whom you prophesized
 Would unravel your unexcelled vehicle as it is,
 Shunning extremes of existence and non-existence –
- 51 Who dispels the darkness of extremist hearts
 And outshines the constellations of false speakers –
 When, through my teacher's kindness, I saw this
 My mind found a rest at last.
- Of all your deeds, your speech is supreme;Within that too it is this very speech;So the wise should remember the BuddhaThrough this [teaching of dependent origination].
- Following such a teacher and having become a renunciate, Having studied the Conqueror's words not too poorly, This monk who strives in the yogic practices, Such is [the depth of] his reverence to the great Seer!
- 54 Since it is due to my teacher's kindness
 I have met with the teaching of the unexcelled teacher,
 I dedicate this virtue too towards the cause
 For all beings to be sustained by sublime spiritual
 mentors.

In Praise of Dependent Origination

- ५५ व्यवः सहिन्दे त्यो नम्भवः नः वरः श्रेनः नवे स्वरः स नवः हेना हुनः नी शः ह्वयः निशः नवः श्रेनः नः वर्षः । स्वरः केशः हुनः नशः हना हुः नानः नरः र्लेना । स्वरः केशः हुनः नशः हना हुः नानः नरः र्लेना ।
- ५ वहेत्रः चास्रकेना देशः द्रमादः वास्यः सेदः ग्रीया । वतः हतः श्रीदः वेतः सहंदः दशः वश्चानयः वदी। । वत्रः हतः विवाः वीयः विवायतः विवायतः स्वीयः स्वीयः विवायतः स्वीयः । इसः सदः दिन् स्वीयः विवायतः स्वीयः विवायतः स्वीयः ।
- स्य चेनायस्य स्वास्य चेनायस्य स्वास्य स्वास

[[रेश्रासायदे दे हे र्हेट | सामा क्रिया वर माना स्थाय हे नाये [

- May the teaching of this Beneficent One till world's end
 Be unshaken by the winds of evil thoughts;
 May it always be filled with those who find conviction
 In the teacher by understanding the teaching's true nature.
- May I never falter even for an instant
 To uphold the excellent way of the Sage,
 Which illuminates the principle of dependent origination,
 Through all my births even giving away my body and life.
- 57 May I spend day and night carefully reflecting, "By what means can I enhance This teaching achieved by the supreme savior Through strenuous efforts over countless eons?"
- As I strive in this with pure intention,
 May Brahma, Indra and the world's guardians
 And protectors such as Mahakala
 Unswervingly, always assist me.

This hymn entitled "Essence of Well-Uttered Insights," praising the unexcelled Teacher – the great friend to the entire world [even] to the unfamiliar – for teaching the profound dependent origination, was composed by the well-read monk Lobsang Drakpai Pal. It was written at the heavenly retreat of Lhading on the towering mountain of Odé Gungyal, otherwise known as [Ganden] Nampar Gyalwai Ling. The scriber was Namkha Pal.

Translated from the Tibetan by Geshe Thupten Jinpa. © Geshe Thupten Jinpa

हेंग्य नहेंद्र प्रतुत सेग्य सम्बद्ध म्यास्त्री।

७७। । क्र. यट्टे. ज्येम श्र. श्रु. श्रु. र. हेम

- १ दहेन् हेत् अर्झे देश ग्रुट र्झेल क्षु नवे स्था | श्रेट त्यस व्हिसस्य स्थान्त स्थान स्था
- द्वार्थस्य स्वराह्म स्वर्थः स् स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्
- दे क्रिन्ड शन्ते। नार्योदः पुत्र स्वरे स्वरं स्
- त्र गुर न्य क्षेत्र संस्था स्टर् न्य देश। ।

 यर देश प्रक्रिय स्वर्थ न्यु स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ ।

 यर देश प्रक्रिय स्वर्थ न्यु स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ ।

 यर प्रक्रिय स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ ।

 य्र गुर स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ ।

यम् द्वरक्षेत्र्द्वे अद्धत्यक्षित्रः यदे स्वत्यक्षित्रः । व्यापः द्वरक्षेत्रः व्याप्तः स्वत्याप्तः स्वरः स्वत्या

Destiny Fulfilled:

Je Tsongkhapa's Education as a Song of Realisation

Om! May we have happiness and excellences!

- The eyes for the world to see higher realms of life and the freedom of enlightenment,
 Resting place for those tired from wandering on the paths of cyclic existence,
 The root of happiness and excellence, my kind Gurus
 And the Noble Lord Wisdom Treasure (Manjushri)—I bow to your feet!
- To gather a great store [of merit and wisdom] with little effort, Rejoicing in virtue is praised as best.

 Particularly, regarding the past virtues collected by oneself, If you develop, without pride, great joy in your virtues of the past

 It is said these past virtues will increase even more.
- To accomplish the purpose of this statement by the Buddha, And also because I see many other purposes as well, It would be good, O mind, to feel such joy! All this I dedicate for the spread of the Teaching.
- In the beginning, I sought much learning.
 In the middle, all teachings dawned on me as spiritual exhortation.
 In the end, I practiced day and night.
 I dedicated all this virtue for the dharma to flourish.

Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- ५ वहनास्यावस्यात्र्यात्र्यस्यस्यस्यस्यः वसःस्रेभ्नेसःदःस्यात्र्य्याःस्यस्यानस्। । वसःस्रेभ्नेसःदःस्यःस्यःस्यःस्यःस्यः। । वसःस्रेभ्नेसःदःस्यःस्यःस्यःस्यः। ।
- च्यायदीत केंद्र स्वास्त्र स्वास्त्र
- भ्रानवे द्वायाया सेट प्राम्य स्थान स्थान
- द्वारादेत्रकेट्ट्रें न्यद्वायहेत्रायदेनात्त्रा

I. Quest for Extensive Learning

- With the darkness of confusion concerning the points to adopt or reject

 Not dispelled by the lamp of perfect learning,

 If you do not know even the path, what need to speak

 Of entering the supreme city of liberation!
- Therefore, not content with a partial or superficial understanding
 Of the treatises of the Invincible Lord of Dharma (Ajita, or Maitreya)
 And those of (the great sages) widely renowned in India As the Six Ornaments and the Two Supreme Ones, I studied them all in great detail.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!
- To determine the precise reality of things
 Are the treatises on valid reasoning. So with much effort
 I studied their difficult points again and again.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!
- 8 Though I toiled in the treatises of sutra and tantra,
 When practicing and expounding their profound meaning
 I found my view had not advanced far beyond
 Those who had learned nothing, and who knew even less.
- 9 So then I studied thoroughly all the essential keys to Induce the correct view through the subtle dialectical reasoning That distinguishes the profound, especially the treatises of Nagarjuna,
 And resolved [all my] doubts completely!
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- ११ दे: दे: प्रायः क्षेशः स्वः उदा ध्वेदः द्वाः । दे: व्यश्यः वावतः विदः दे: द्वाः विदः विदः विदः विदः । विदः दु: यादः विदः विदः विदः विदे विदः विदः विदः । विदे विदः यादः विदः विदः विदे विदे विदे विदे ।
- द्यायद्यत्वस्य प्रस्ति स्वर्धात्यस्य स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स स्वर्धाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्

- There are two vehicles to travel to perfect enlightenment:
 The Profound Vajra Vehicle and Perfection Vehicle.
 Secret Mantra is said to be much superior
 To the Perfection Vehicle
 This is as well-known as the sun and moon.
- 11 While accepting these words to be true,
 There are some who do not ask
 "What is the Profound Vehicle?"
 And yet assume the mantle of scholars.
- 12 If such people are supposed to be intelligent,
 Then where are the dull-witted?
 How extraordinary that anyone should neglect
 An unexcelled path so difficult to meet!
- Therefore, I entered the supreme vehicle of the Victorious Ones,
 The Vajra Vehicle, even rarer than the Buddhas;
 A profound treasury of the two spiritual feats
 And I studied it long with much effort.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!
- Not knowing the paths of the three lower tantras, And deciding that Highest Yoga Tantra Is the supreme of all class of tantras, Is just making an assertion.
- 15 Realising this, I familiarised myself both generally and specifically
 With the three genres of Action Tantra such as
 General Secret Tantra (Samanya Vidhiramguhyatantra),
 True Fulfillment (Susiddhi), The Tantra Requested by Subahu (Subahupariprocha),
 and Later Concentration (Dhyanottara)
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- न्यायः देव : केट्रां हे : यहं व : यहं व : यहं व : यहं न : यहं । व : यहं व : यहं व : यहं व : यहं न : यहं व : यह कुवा : यहं : यहं व :
- त्रायः देवः केट्रं हे नहं वः अद्धिः सदे नहे न। कृतः प्रेन् न्यायः स्वायः विद्यः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स
- ११ चित्रप्तस्यावर्त्त्रस्य स्वर्भायाः । स्वाय्यस्य स्वर्त्त्रस्य स्वर्णायः हे स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यायः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्ण
- १६ धर्ने क्रुन्न बिद्द न्द्र न्य हिद्द स्थे जिहेन। च्राय प्रेन हो स्था स्वेन न्द्र न्य स्थे स्था न च्राय प्रेन हो स्था स्वेन न्य स्थे स्विन स्वे स्था न च्राय होने ने स्था स्वेन स्थित स्वे स्था निक्ता निका न च्याय होने स्था स्वेन स्था स्था स्था स्था स्था निका स्था स्था निका स्था स्था निका स्

५८:वॅर-क्व.केर-वॅश-१-अट-५.वड-०-वदे-भ्रवश-१-५८-वॅद्

- Within the second class of tantra, Performance Tantra, I studied the main Tantra, Manifest Enlightenment of Vairocana (Vairocanabhisambodhi), And ascertained thoroughly the precise orientation Of all Performance Tantras.

 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
- Within the third class of tantra, Yoga Tantra,
 I studied the main Tantras, the glorious Compendium of
 Reality (Tattvasamgraha),
 The Explanatory Tantras such as Vajra Pinnacle
 (Vajrasekhara),
 And enjoyed the feast of Yoga Tantra.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- Within the fourth class of tantra, the Highest Yoga Tantra, I studied the Root and Explanatory Tantras and others Renowned as the sun and moon among the Indian sages: The Secret Community (Guhyasamaja), a father tantra, And the yogini tantras of Vajra Laughter (Hevajra) and Supreme Bliss (Samvara).
- I also studied the Wheel of Time Tantra (Kalachakratantra), unique amongst Tantras,

An original system of explanation different from other Sutras and Tantras,

Along with its illuminating exegesis, the Stainless Light (Vimalaprabha).

Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

This is the first chapter telling how I first sought extensive learning.

- द्वायः प्रदेशको द्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः प्रदेशः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः प्रदेशः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः प्रदेशः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः प्रदेशः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः प्रदेशः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः । स्वयः स्वयः
- त्रणयः देव के दें हे न इव स्राहेव स्रावे महिना ।

 इव स्रावित न कुन्य स्राहेव स्राहेव स्राहेव स्राहेव ।

 इव स्राहेव स्राहेव स्राहेव स्राहेव स्राहेव स्राहेव स्राहेव ।

 इव स्राहेव स्रा
- १३ वह्रअन्तिः नुहर्याचीयार्ज्जेन्याः चीत्र्वाः वित्राः वित
- क्ट्रस्मात्त्रसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् । क्ट्रस्मानुद्रस्य स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् क्ट्रसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् । क्ट्रसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् । क्ट्रसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् स्वानसम् ।

II. All Teachings Dawn as Spiritual Instruction

Then, with a firm, intense and enduring faith
In Manjugosha, supreme in banishing the darkness from the disciples' minds,

I prayed in order that all scripture might dawn as spiritual instruction

And strove to fulfill all the necessary conditions.
Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- 21 Striving thus I found a special conviction
 In the stages of the path to enlightenment
 Transmitted from Nagarjuna and Asanga;
 And hence the Perfection of Wisdom, the best scriptures on the profound,
 Dawned upon me as spiritual instructions.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
- In this northern land, there are many,
 Regardless of whether they have studied the texts on
 epistemology or not,
 Who say there is no graduated practice of the path leading to
 enlightenment
 In the Compendium of Valid Cognition (Pramanasamuccaya)
 And the corpus of seven treatises.

Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- 23 But they also take as authoritative the permission Granted by Manjushri to Dignaga, when he explicitly said, "Write this book. In the future it will become The eye for all wandering beings."
- 24 Seeing this to be completely illogical,
 I especially looked into this and found that the
 Pramanasamuccaya's opening homage
 Is established by the Pramanasiddhi chapter (of Dharmakirti's
 Pramanavrttika)
 Through the forward and reverse logical procedures,

- १८ ने द्वार्यस्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्व स्वाप्त्र स्व

- As proving Bhagawan Buddha to be an authoritative master For those seeking liberation.

 From this I found a deep conviction
 That his teaching alone is the ford
 For those seeking total freedom.
- As such, all the essential points gathered as one,
 Of the paths of the two Vehicles
 Unfolded through the path of reasoning
 And I found a very special joy.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
- 27 Then I brought together Bodhisattva Level (Bodhisattvabhumi) and Ornament of Sutras (Sutralamkara) and with much hard and proper work
 All the treatises of the Invincible Dharma Lord (Maitreya)
 And those following him, arose as spiritual instruction.

Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

Relying especially on the Compendium of Practices (Shikshasamuccaya),

Which grants certainty on all the points of the path With its graded arrangement of the vast and profound teaching, I saw clearly the many points of the supreme treatises of Nagarjuna

Such as Compendium of Sutras (Sutrasamuccaya) as stages of practice.

Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

29 Then relying on Buddhaguhya's well-explained practical instructions

On the Dhyanottara, and Vairocanabhisambodhi, All the points of the path dawned well as spiritual instruction. Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- २० न्यवाध्वाने हेन् नश्चान्य व्याप्त व्याध्या क्षेत्र व्याध्य व्याध्य
- च्यादः देव के दूर् हे म्य देव स्थित स्वतः स्वतः स्वतः । क्षायः स्वरः स्वरः स्वतः स्वतः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । क्षायः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । क्षायः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । क्षायः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । स्वरः ।
- द्रम्यः भूतः न्यायः स्त्र्यः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्राः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स द्रम्यः स्त्रेतः स्त्रयः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त्रेतः स्त
- ३३ श्चांत्रवर्षः न्यात्यश्चेत्रवर्षः व्यव्यव्यात्यः । इत्तर्वः कुनः प्रत्यः कुनः विश्वः स्थान्यः व्याः । इत्तर्वः कुनः प्रत्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः । इत्यवेतः कुनः प्रत्यः विष्यः विष्यः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः प्रत्यः विष्यः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः प्रत्यः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः प्रत्यः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः प्रत्येतः विष्यः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः प्रत्येतः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः । इत्यवेतः विष्यः ।
- २० हुं या ने मावन र उ. महाराज्य स्वाप्ता मावन र वे मावन र वे स्वाप्ता मावन र वे स्वाप्ता

30 Seeing how the essentials of the path of the Shri
Tattvasamgraha
Are incorporated in the three samadhis was not that hard,
But for the difficult way to meditate on the profound in that path
I relied on the great Pandit Buddhaguhya's correct explanation

31 Which combined the Root, Explanatory, and Subsidiary Yoga Tantras,
And on the Stages of Meditation's proper explanations
Of the profound practices of the three tantra classes;
And the darkness in my mind was dispelled.

Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

- The ultimate of all well-spoken teachings of the Mighty Sage (Buddha)
 Is the glorious Highest Yoga Tantra,
 Of which the greatest and most profound 6
 Is the King of Tantras, the Glorious Guhyasamaja.
- On this the supreme philosopher Nagarjuna said:
 "The essentials of the path are sealed in the Root Tantra
 By the six limits and four ways.
 And thus they must be understood through a Master's
 instruction
 Following the Explanatory Tantras."
- Acknowledging this was crucial, I acquainted myself for a long time
 With even the smallest texts of the Noble Nagarjuna's tradition
 of Guhyasamaja;
 The ultimate core instructions contained in the Concise
 Sadhana (Pindavidhisadhana),
 The Lamp of Integrated Practices (Charyamelapakapradipa),
 and the Stages of Presentation and so on.

- ३५ र्बेंब्र खेर्स् इस्याययायस्य होन्स्या । यहेब्र ब्रथायश्वन् सुन् केब्र संख्यान्त्रः हो । ख्रायश्वन् स्थाययायन् स्थायवेश्वर् स्थायु स्था । ख्रायस्य स्थाययायन् स्थायवेश्वर् स्थायु स्था । ख्रायस्य स्थाययायन् स्थायवेश्वर् स्थायवेश्वर् केन्। । ख्रायस्य स्थाययायस्य स्थायवेश्वर् स्थायवेश्वर् स्थायवेश्वर् स्थायवेश्वर स्थायविष्ठ स्यायविष्ठ स्थायविष्ठ स्थायविष्ठ

नर-तु-वालुद-सुवाक प्रवाक उद-वाद्यक पर-प्रत्ये भ्रवक हे वाहेक पर्वे ।

- दे विद्यान्यस्य स्वतः स्वत स्वतः स स्वतः स्वत
- २१ क्रियाश्चराञ्चेत्रायाम् वित्राह्मेत्रात्ते महिन्। च्यार्के अप्तहेत्रायते श्चेत्राया स्टायत् अप्यान्। । मुद्राया स्वरायश्चरा स्वराया स्वरायत् स्वराया । मुद्राया स्वरायश्चरा स्वराया स्वराया । मुद्राया स्वरायश्चरा स्वराया स्वराया । स्वराया स्वरायश्चरा स्वराया स्वराया । स्वराया स्वरायश्चरा स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया । स्वराया स्वरा

- Also, relying on the lamp-like illuminator (Bright Lamp,
 Pradipodyotana) of the Root Tantra
 And combining them with the five great Explanatory Tantras,
 I studied with enormous effort;
 And discovered the two stages of the Guhyasamaja, in general,
 And, especially, all the essentials of the perfection stage.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!
- Through this, the essential point of many tantras,
 Such as Samvara, Hevajra, and Kalachakra,
 Dawned upon me as spiritual instructions.
 I have explained these elsewhere,
 Here, I just show a door for the discerning.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

This is the second chapter, on the middle period when all scriptural traditions arose as spiritual instructions.

- III. Constant Practice and Total Dedication
- Having thus become a treasure of instructions,
 I trained to familiarize myself with a path comprising
 The common path and the exclusive path with its two stages,
 The two Mahayana systems.
 - Thinking this over, how well my destiny is fulfilled! Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!
- It is said that the Ganges-like prayers of the bodhisattvas
 Are all contained within the prayers to uphold the Holy Dharma.
 Thus whatever virtue I accumulated
 Was dedicated to the spread of the Sage's Teaching.
 Thinking this over, how well my destiny is fulfilled!
 Thank you very much, Noble Lord Wisdom Treasure!

Destiny Fulfilled

न्यस्य प्रतः भ्रम्य प्रतः प्रत्य प्रतः प्रत्य । नर्षे सम्बद्धः भ्रम्य प्रतः प्रत्य प्रतः प्रतः ।

- ८० ने.चर्यार्चनःमधे.नेवी.चद्यःक्ष्यं व्यवस्थाः स्थानः देशःसः दन्ने 'खेश्वः दर्जीनः सः खुशः गुद्या । इतः सदेः चहुवः बुवाशः क्ष्यः सुशः गुद्या । कुवः सः ने कुशः सदेः वशः सः दहुवाः सर्व्या ।

।विने हे रहे तिय में र्से विवर मुन्य मार्थ निवय मुन्य मही

This is the third chapter: how at the end I practiced day and night and dedicated all virtues to the spread of the Teaching.

- In order to increase my own virtue enormously
 And to show properly the correct way
 To the many fortunate beings who possess a discerning mind
 I have written this account of my education.
- By the store of virtue attained through this process
 May all beings, through this same procedure,
 Maintain the unexcelled conduct of the Buddha,
 And enter the path that pleases the Victorious Ones.

Colophon: Written by the Eastern Monk Tsongkhapa Lobsang Drakpa at the Triumph of Virtue Monastery on the great Nomad Mountain, with Kazhipa Rinchen Pal as scribe.

Acknowledgement:

This is a revised version of the earlier translation published by the Library of Tibetan Works and Archives in The Life and Teachings of Tsongkhapa. I owe much to that translation.

Acknowledgement:

I would like to thank Gavin Kilty wholeheartedly for checking my translation thoroughly and putting it into more readable English.

This translation has been prepared for the Russian teachings at Thekchen Choeling Temple, Mcleod Ganj on 19-21 December 2011. We dedicate any merit gained through this effort for justice, compassion and wisdom to spread everywhere for peace and harmony to triumph in the world.

Any remaining error in the text is mine only. I would highly appreciate anyone's help in improving it for the benefit of others.

© December 2011 Tenzin Tsepag

Rain Shower of Feats: A Song of the Four Mindfulnesses

७७||८्यु:स्रदेःक्ष्रंबि८:५५,त्यःयवि:व्युत्यःक्ष्यःस्युत्यःस्युत्यःस्यः १ अः चुःयःयवुत्यसःस्य ।

- द प्रिंच ना महित्येत् प्रिंच महित्ये प्रिंच महित्या । देव चीया प्रस्ता प्रदेश प्राप्त क्षेत्र हैं प्रेंच हें क्षेत्र हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र प्रदेश प्राप्त हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र प्रदेश प्राप्त हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र हैं क्षेत्र प्राप्त हैं क्षेत्र हैं क

Rain Shower of Feats A Song of the Four Mindfulnesses as a Guide to the View of the Middle Way

H. H. Kalsang Gyatso, the VII Dalai Lama

1. Mindfulness of the Spiritual Mentor

On the unwavering cushion of the union of method and wisdom Sits the kind Lama who is the nature of all protectors.

There is a Buddha in the state of culmination of realizations and cessations.

Beseech him in the light of admiration, through casting away critical thoughts.

Don't let your mind go astray, but place it within admiration and reverence.

Through not losing mindfulness, hold it within admiration and reverence.

2. Mindfulness of Compassion

In unending samsara, the prison of suffering,

Wander the sentient beings of the six realms, bereft of happiness.

There are your parents, who reared you with affectionate kindness.

Meditate on compassion and affection by relinquishing attachment and aversion.

Don't let your mind go astray, but place it within compassion.

Through not losing mindfulness, hold it within compassion.

- ३ श्चित्तः क्षेत्रः तायते क्षेत्रः श्चित्रः व्याव्याः स्वाव्यः स्वाव्यः स्वाव्यः स्वाव्यः स्वाव्यः स्वाव्यः स्व स्वाय्यः त्राव्यः स्वाव्यः स्वयः स्वय

3. Mindfulness of Your Body as a Divine Body

In the celestial mansion of great bless, joyous to sustain, There exists the divine form of your body which is a purified state of the aggregates.

There is a deity in the nature of union of the three divine bodies.

Don't view it as ordinary, but train in divine dignity and immaculate appearance.

Don't let your mind go astray, but place it within profundity and clarity.

Through not losing mindfulness, hold it in an attitude of profundity and luminosity.

4. The sphere of appearing and existing phenomena

Is pervaded by the space of the ultimate clear light of suchness.

There is an ineffable ultimate reality.

View this nature of emptiness through abandoning mental contrivances.

Don't let your mind go astray, but place it in the ambiance of reality.

Through not losing mindfulness, hold it in the ambiance of reality.

44

Rain Shower of Feats: A Song of the Four Mindfulnesses

45

५ बूद्दान श्रु क्वें प्रश्न क्वें प्रश्न श्रु हिंगी। प्रति क्वें क्वें प्रश्न क्वें प्रश्न क्वें श्रु हिंगी। प्रति क्वें क्वें स्था श्रु क्वें क्वें प्रश्ने क्वें क्वें हिंगी। प्रति क्वें क्वें स्था श्रु क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें वि । प्रति क्वें क्वें स्था श्रु क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें क्वें वि । प्रति क्वें क्व

5. At the crossroads of the six collections (of consciousness) which have diverse perceptions,

Are seen the hazy dualistic phenomena which are baseless.

There is a magical show which is by nature deceptive.

Don't believe it to be true, but view it as having the nature of emptiness.

Don't let your mind go astray, but place it in the nature of appearance-emptiness.

Through not losing mindfulness, hold it in the nature of appearance-emptiness.

Lama Tsongkhapa passed down this teaching to Jetsun SherabSenge, and the Dalai Lama VII put it in writing.

English translation by Geshe Dorji Damdul, Nov. 22, 2006

७७। |पस-मी:गर्डे-र्ने-इस-गशुस-नतुगश-र्से |

- १ क्षेत्र वेश चलुव चर्चा मुश्र चल्टी स्ट्री । क्षेत्र क्षेत्र व्यस्त स्थल ग्रीश चर्चा श्रास्त्र स्था । क्षेत्र स्थल च्यस्त स्थल ग्रीश चर्चा श्रास्त्र स्था । क्षेत्र स्थल चलुव स्थल ग्रीश चर्चा श्री स्वर्ध में स्थल ।
- ३ इस्यान्त्रान्देश्यत्वुद्दास्येन्यस्यस्येन्यस्यस्यः । यन्यत्वसः नेद्वायानेद्रात्वे यावे यवस्यस्यस्य । स्रोन्यायम् स्यायाध्यस्य स्वयः स्वयः । युद्धान्यस्य स्वयः स्वयः स्वयः ।
- लट.लट.चश्रश्चाचश्ची.शवु.श्चेट.सेश.कूंच । लप्त.लच्चेश्चाचश्चाचश्चाच्चाचश्चाच्चाचश्चाच लप्त.लच्चेंच्य.श्चेंच्य.च्चेंच्य.च्चेंच्य । ल्य.लच्चेंच्य.श्चेंच्य.च्चेंच्य.च्चेंच्य.च्चेंच्य ।

The Three Principal Aspects of the Path

Je Tsongkhapa

Homage to the most venerable teachers!

- I shall explain here to the best of my ability:
 The essential points of all the scriptures of the Conqueror;
 The path acclaimed by all excellent bodhisattvas;
 The gateway for the fortunate ones aspiring for liberation.
- Those who are not attached to the joys of cyclic existence,
 Who strive to make meaningful this life of leisure and
 opportunity,
 And who place their trust in the path that pleases the Conquerors O fortunate ones, listen with an open heart.
- Without pure renunciation there is no means to pacify
 The yearning for the joys and fruits of samsaric ocean;
 And as craving for existence chain us thoroughly,
 At first search for a true renunciation.
- 4 By cultivating in mind that this human life is so hard to find Yet has no time to spare, preoccupations with this life will cease; By contemplating repeatedly the truth of karma and samsaric suffering,

Preoccupations with next life will come to cease.

As you habituate in this way and when not even an instant Of admiration arises for the prosperities of cyclic existence, And when the thought aspiring for liberation arises day and night,

At this point true renunciation has arisen.

- ८ देश.स्त्रुट.दे.प्पट.ह्य.सेसश.सर्हेन.सेुट्। देव.क्ट्रंगश.चट्रे.चत्र.कु.टे.स्व.की । क्रि.स्व.क्ट्रंगश.चट्रे.चत्र.कुन.कुन.की । क्रि.स्व.क्ट्रंगश.कुश.चेंग्रेश ।
- यः देना सुद प्यते श्वन क्षेत्र गृद द मः द मे न म यह्ने न प्याप्त क्षेत्र प्रे प्रकेट प्राप्त म्यू मा न स्वाप्त क्षेत्र मा न स्वाप्त क
- र्टः क्ष्यान्यस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स् स्वान्त्रस्य स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त
- देश्वरहेत्रव्देवरहेत्रस्वेशस्वरस्यः भेत्रवेहरहुरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । देशः वहुरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । देशः वहुरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । देशः वहुरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः ।
- १० वित्र वित्र वित्र विशेषात्र विश्व वित्र व वित्र वि
- ११ श्रूमः नाहेत् त्यत्रेयः नक्षुः नः सेन् सः न्हा । श्रूमः साम्यात्येदः त्ययः नक्षेत्रं नः नाहेश्या । हे :श्रीमः स्रॉंग्सं स्थूमः नः सेन् श्रीमः सः सेन्। नः नुमः स्थूमः स्थूमः स्थूमः स्थूमः स्थूमः सेन्।

- 6 Such renunciation too if it is not sustained
 By pure awakening mind it will not become a cause
 Of the perfect bliss of unexcelled enlightenment;
 Therefore O intelligent ones, generate the excellent awakening mind.
- They're being swept away constantly by four powerful rivers;
 They're bound tightly with fetters of karma most difficult to
 escape;
 They're trapped inside the iron mesh of self-grasping;
 They're enveloped from everywhere by thick mists of
 ignorance;
- 8 They take birth within cyclic existence that has no end,
 Where they're endlessly tormented by the three sufferings.
 By reflecting on all your mothers who suffer such conditions,
 Please generate the supreme awakening mind.
- 9 If you do not have the wisdom realising the ultimate nature, Even if you gain familiarity with renunciation and awakening mind, You will not be able to cut the root of samsaric existence; So strive in the means of realizing dependent origination.
- When with respect to all phenomena of samsara and nirvana, You see that cause and effects never deceive their laws, And when you have dismantled the focus of objectification, At that point you have entered the path that pleases the Buddhas.
- 11 So long as the two understandings of appearance, Which is undeceiving dependent origination, And emptiness devoid of all theses - remain separate, So long you have not realized the intent of the Sage.

The Three Principal Aspects of the Path

- ११ वसः लेगः रेशः पहेँ पासे रायः स्वाया । हेत्रः प्रेशः प्
- यवर पहुंच स्थानक प्रत्ये प्रमान स्थान स्यान स्थान स्था स्थान स्था

हां विश्वास विदेशों स्वाप्त के स्व हिंदू के स्वाप्त के स

- However at some point when, without alternation but at once,
 The instant you see that dependent origination is undeceiving,
 If the entire object of grasping at certitude is dismantled,
 At that point your analysis of the view has culminated.
- Furthermore when appearance dispels the extreme of existence, And when emptiness dispels the extreme of non-existence, And if you understand how emptiness arises as cause and effect,

You will never be captivated by views grasping at extremes.

Thus when you have understood as they are
The essentials of the three principal aspects of the path,
O son, seek solitude and by enhancing the power of
perseverance,

Swiftly accomplish your ultimate aspiration.

This advice was given by the monk Lobsang Drakpai Pal to Ngawang Drakpa, a leading person of Tsakho region.

© English translation. Geshe Thupten Jinpa, 2003.